

प्रो. रवीन्द्र कुमार सिन्हा

Prof. Ravindra Kumar Sinha



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

प्रो. रवीन्द्र कुमार सिन्हा

प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार सिन्हा पटना विश्वविद्यालय, पटना में जीवविज्ञान विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख हैं। आपको एक अन्तरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा अभिनन्दित अग्रणी अनुसंधानकर्ता और वन्यजीव संरक्षक के तौर पर "डॉल्फिन मैन ऑफ इंडिया", के रूप में जाना–माना जाता है। आपने सामान्य तौर पर गंगा नदी की परिस्थितिकी और विशेष तौर पर नदी की जैविक विविधता के बारे में पिछले 35 वर्षों के दौरान किए गए वैज्ञानिक अनुसंधान और अनवरत संरक्षण प्रचार कार्य में गंगा नदी की डॉल्फिन को विलुप्त होने से बचाने में अहम भूमिका निभायी है।

2. आपका जन्म 01 जुलाई, 1954 को बिहार के जहानाबाद जिले के क्योटार गांव में हुआ। आपने अपनी बी.एससी ऑनर्स की डिग्री 1973 में पटना साइंस कॉलेज से जीवविज्ञान में हासिल की। आपने एम.एससी और पीएच.डी की डिग्री पटना विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आपने भागलपुर विश्वविद्यालय में कार्य करने के कुछ समय के पश्चात् 1979 में पटना विश्वविद्यालय में लेक्चरर के तौर पर ज्वॉइन किया। आपने गंगानदी की डॉल्फिन और नदी की अन्य वनस्पतियों पर विशेष जोर देते हुए गंगानदी के विभिन्न परिस्थितिकी संबंधी पहलूओं पर अनुसंधान कार्य किया। आप 1985 में गंगा कार्य योजना के प्रारम्भ होने के समय से ही उसके साथ जुड़ गए। आपने, गंगा नदी के जल के वितरण, जनसंख्या की स्थिति, परिस्थितिकी अपेक्षाओं और डॉल्फिन को होने वाले खतरों का आकलन करने के मकसद से भारत और नेपाल में सम्पूर्ण गंगा नदी और उसकी अधिकांश सहायता नदियों का लगातार सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के दौरान आपने पाया कि अव्यवस्थित शिकार और उनके प्राकृतिक आवास के विकृत होने तथा अनेक स्थानों के समाप्त हो जाने के कारण नदी में रहने वाले जानवर विलुप्तता का सामना कर रहे थे।

3. आपने स्थानीय मछुआरों और स्कूल तथा कॉलेज के छात्रों के लिए शिक्षा और जागरूकता संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय प्रिन्ट और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने आपके अनुसंधान और संरक्षण के प्रयासों का विस्तृत रूप से प्रचार किया। जिसने राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों ही स्तर पर नीति निर्माताओं, कार्यपालकों और वैज्ञानिक समुदायों का ध्यान आकृष्ट किया। आपने गंगा नदी की डॉल्फिन की सुरक्षा की तत्काल आवश्यकता के बारे में जो जागरूकता कार्यक्रम चलाया, उसके फलस्वरूप भारत सरकार ने 2009 में डॉल्फिन को भारत के राष्ट्रीय जलीय पशु का दर्जा दिया। इससे भारत विश्व का पहला ऐसा देश बन गया जिसने डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलीय पशु का दर्जा दिया।

4. मत्स्य तेल क्षेत्र में उपयोग के मकसद से मछली के आकर्षण के तौर पर गंगा नदी की डॉल्फिनों के शरीर से तेल निकालने के लिए लम्बे समय से उनका शिकार किया जाता रहा है। आपने मछुआरों के पास आसानी से उपलब्ध मछलियों के स्क्रेप्स से इसके एक विकल्प की खोज की है। भारतीय मछुआरों के बीच इस विकल्प के बारे में प्रभावी तरीके से प्रचार करके और उसे लोकप्रिय बनाकर, डॉल्फिन के शिकार में पर्याप्त रूप से कमी आई है। इस खोज को 2002 में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बायोलॉजिकल कंजरवेशन (लन्दन) नामक पत्रिका में प्रकाशित किया गया। आपने गंगा नदी की डॉल्फिन के लिए 2010 में एक संरक्षण कार्य योजना विकसित की जिसे भारत सरकार ने पूरे उत्साह से स्वीकार किया। आपने पीर–रिव्यूड जर्नल्स में 100 से अधिक अनुसंधान पेपर्स, चार पुस्तकें तथा 40 से अधिक तकनीकी रिपोर्ट जो कि गंगा की डॉल्फिन, नदी की जैविक विविधता और गंगा के प्रदूषण के बारे में थे, प्रकाशित किए। 2001 में आपने पहली बार पश्चिम बंगाल में गंगा नदी की रोकी गई गर्भिणी डॉल्फिन को बचाने और उनके स्थानान्तरण का कार्य पूरा किया। आप 1994 में आईयूसीएन अन्तरराष्ट्रीय (प्रकृति और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण यूनियन), जिसका मुख्यालय जिनेवा, स्वीटजरलैंड में है, के स्पाइसिज सर्वाइवल कमीशन के सदस्य बने। आपको 1996 में लिनियन सोसाईटी ऑफ लन्दन के फैलो के रूप में चुना गया। 1997 में आपको आईयूसीएन के तत्वावधान में एशिया नदी डॉल्फिन समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

5. आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है जिनमें 1999 में प्रदान किया गया ऑर्डर ऑफ द गोल्डन आर्क, गंगा नदी की डॉल्फिनों और गंगा नदी की जैविक विविधता के बारे में आपके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य के साथ–साथ भारत में तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आपके द्वारा किए गए संरक्षण कार्य के लिए मोस्ट एक्सीलेंट ऑर्डर ऑफ नीदरलैंड, 2000 में राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत का गोल्डन जुबली पुरस्कार, 2007 में नवीन सिन्हा प्रतिभा सम्मान शामिल हैं। दूरदर्शन के टाइम्स नाऊ नामक एक अंग्रेजी चैनल ने आपको 2011 में एक चमत्कारी भारतीय के तौर पर चुना और 2013 में सीएनएन–आईबीएन नामक दूसरे दूरदर्शन के चैनलों ने आपको एक सकारात्मक भारतीय के तौर पर पहचान दी है।

Prof. Ravindra Kumar Sinha

Prof. Ravindra Kumar Sinha, Professor and Head of Department of Zoology at Patna University, Patna, is an internationally acclaimed pioneer researcher and wildlife conservationist, popularly known as "Dolphin Man of India". His scientific research and relentless conservation campaign for the past 35 years on the ecology of River Ganga in general and biodiversity of the river in particular have been crucial in saving the Gangetic dolphin from extinction.

2. Born on July 1, 1954, in village Keotar in Jahanabad District of Bihar. Prof. Sinha earned his B.Sc. degree with Honours in Zoology from Patna Science College in 1973, and M.Sc. Zoology and Ph.D. degree from Patna University. He joined Patna University as Lecturer in Zoology in 1979 after a brief stint at Bhagalpur University. He researched various ecological aspects of the river Ganga with special emphasis on the Gangetic dolphin and other fauna of the river. He got associated with the Ganga Action Plan since its inception in 1985. He conducted continuous surveys of the entire length of the river Ganga and most of its tributaries in India and Nepal to assess the distribution, population status, ecological requirements, and threats to the dolphin. The animal was facing extinction due to indiscriminate poaching and habitat degradation and loss in many areas.

3. Prof. Sinha organized education and awareness programs among the local fishermen as well as school and college students. The national and international print and electronic media widely promoted his research and conservation efforts, attracting the attention of both national and international policy makers, executives, and scientific communities. In response to the awareness of the urgency of protecting the Gangetic dolphin raised by Prof. Sinha, Government of India designated the dolphin as National Aquatic Animal of India in 2009. This has made India the first country in the world to have dolphin as National Aquatic Animal.

4. The Gangetic dolphins have long been poached for extraction of their body oil as a fish attractant for use in oil fishery. Prof. Sinha discovered an alternative from fish scraps available freely at the doorsteps of fishermen. By effectively communicating and popularizing this alternative among Indian fishermen, the dolphin poaching has been significantly reduced. This discovery was published in the internationally reputed journal Biological Conservation (London) in 2002. He developed the Conservation Action Plan for the Gangetic dolphin in 2010, which was enthusiastically accepted by the Government of India. He has published over 100 research papers in peer-reviewed journals, four books, and over 40 technical reports primarily on the Gangetic dolphin, river biodiversity, and Ganges contamination. In 2001, he accomplished the first ever rescue and translocation of a stranded pregnant Gangetic dolphin in West Bengal. He became member of Species Survival Commission of IUCN (International Union for Conservation of Nature and Natural Resources) headquartered in Geneva, Switzerland, in 1994; was elected Fellow of the Linnean Society of London in 1996, and elected Chairman of the Asian River Dolphin Committee in 1997 under the aegis of the IUCN.

5. Prof. Sinha has been honoured with many awards including the Order of the Golden Ark in 1999, the Most Excellent Order of the Netherlands for his pioneering work on the Gangetic dolphin and the biodiversity of the Ganges as well as for his conservation work in India and internationally, Golden Jubilee Award of the National Academy of Sciences, India in 2000, Navin Sinha Pratibha Samman in 2007. The TIMES NOW, an English TV Channel selected Prof. Sinha as one of the Amazing Indians in 2011; and in 2013 the CNN-IBN, another TV Channel, identified him as a Positive Indian.